Bihar Board Class 7 Sanskrit Notes Chapter 11 डॉ. भीमरावः अम्बेदकरः

डॉ. भीमरावः अम्बेदकरः Summary

[वर्तमान भारत के सामाजिक परिवर्तन में तथा भारतीय संविधान के निर्माण में बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर का अदभत योगदान है। अनेक विश्वविद्यालयों से इनका नाम जुड़ा हुआ है। स्वयं दलित वर्ग से सम्बद्ध होने पर भी सम्पूर्ण भारतीय समाज की समरसता पर इन्होंने बल दिया तथा शताब्दियों से सामाजिक सुविधाओं से वञ्चित एक बड़े वर्ग को इन्होंने अधि कार दिला कर समाज के सामान्य क्रियाकलाप से जोड़ा । इस पाठ में डॉ० अम्बेदकर का संक्षिप्त जीवन तथा भारतीय राजनीति में इनके योगदान का परिचय दिया गया है ।

मध्यप्रदेशस्य महूनामके ..... पर्यन्तम् अध्ययनं कृतवान् ।

शब्दार्थ-चतुर्दशे – चौदहवें में । जातः – उत्पन्न हुए । महारजाती – महार जाति में । जन्मतः – जन्म से । स्थितात् – स्थित, अवस्थित । उत्तीर्णः – सफल हुए । तत्रैव = वही । गृहीत्वा = ग्रहण कर, लेकर । पर्यन्तम् – तक । कृतवान् = किया ।

सरलार्थ – मध्य प्रदेश के महू नामक नगर में अप्रैल महीने के 14 तारीख 1891 ई० को बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर का जन्म हुआ था । महर जाति में उनका जन्म हुआ था । जन्म से ही भीमराव मेधावी थे । उनकी प्रारंभिक शिक्षा रत्नागिरीर नगर के मराठी विद्यालय और सतारा नगर के प्रशासनिक विद्यालय में हुई । इसके बाद मुम्बई नगर में स्थित एलफिस्टन विद्यालय से 1907 ई० में भीमराव प्रवेशिका परीक्षा पास किया । वहीं महाविद्यालय में छात्रवृत्ति प्राप्त कर बी० ए० तक अध्ययन किया ।

अल्पकालं बड़ौदा.....इत्युपाधि स प्राप्तवान् ।

शब्दार्थ-अल्पकालम् – थोड़ा समय । सेवायाम् – सेवा में। स्थित्वा – रहकर । महाराजात् – महाराजा से । वृत्तिम् – आर्थिक सहायता । लब्ता – पाकर । प्राप्तवान् – प्राप्त किया । विदेशेषु = विदेशों में । अनेकत्र – अनेक स्थानों पर । स्वप्रतिभायाः = अपनी प्रतिभा का । शीघ्रमेव – (शीघ्रम् एव) शीघ्र ही । तुरन्त ही । अत्यजत् = त्याग दिया, छोड़ दिया ।

सरलार्थ-कुछ समय बड़ौदा महाराज की सेवा में रहकर वे महाराज से आर्थिक सहायता प्राप्त कर कोलम्बिया विश्व विद्यालय से डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की। विदेशों में अनेक जगह अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर भीमराव विख्यात हो गए । वे विधि शास्त्र के महान पण्डित (ज्ञाता) हुए । मुम्बई नगर में कॉलेज शिक्षक नियुक्त हुए किन्तु शीघ्र ही उस पद को त्याग दिए । लंदन नगर जाकर अर्थशास्त्र में डी० एस०-सी० की उपाधि प्राप्त की। .

भारतम् आगम्य दलितानाम् .....दिसम्बर 1956 ई० वर्षे समाप्तम् ।

शब्दार्थ-आगम्य – आकर । दलितानाम – दलितों का । अस्पश्यानाम – अछूतों का । हिताय – भलाई के लिए । महत्कार्यम् – बड़े कार्य (को)। ग्रन्थरचनया – ग्रन्थ रचना के द्वारा । प्रतिभाम् = प्रतिभा / कुशलता को । प्रकाशितवान् – प्रकाशित किया । नेतृत्वम् – अगुआई (को) । अनेकान् – अनेक (बहुवचन) । पारयित्वा = लागू

https://www.evidyarthi.in/

कर, पास करा कर । समरूपताम् – समान रूप (को । प्रकृटितवान् – प्रकट किया । गृहीतवान् – ग्रहण किया । तस्य – उसका । भास्वरम् – चमक से भरा हुआ, उत्कृष्ट । समाप्तम् । समाप्त हुआ ।

सरलार्थ – भारत आकर दलितों और अछूतों के हितार्थ महान कार्य किए। ग्रन्थ रचना के द्वारा अपनी प्रतिभा को प्रकाशित किया। सामाजिक कार्य में अगुआई की । भारतीय संविधान के निर्माण में उनका महान् योगदान है । अनेक अधिनियमों को पास कराकर उसने भारतीय समाज के समान रूप को प्रकट किया । जीवन के अन्तिम समय में उन्होंने अनेकों दलितों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण किया । उनका चमक से भरा हुआ जीवन 6 दिसम्बर 1956 ई० को समाप्त हो गया।

भारतीयसमाजस्य विषमतां ..... योगदानं कदापि न विस्मरति ।

शब्दार्थ-विषमताम् = अलगाव, असमानता । दृष्ट्वा – देखकर । अतीव – अत्यन्त । पीड़ितः = दुःखी । लब्धवान् – प्राप्त किया । वञ्चिताः – रहित । आरक्षणव्यवस्थाम् = आरक्षण की व्यवस्था को । मरणोत्तरम् – मृत्यु के बाद । कदापि कभी भी । अस्य = उसके । विस्मरति – भूलता है। सरलार्थ-भारतीय समाज की विषमता को देखकर भीमराव अत्यंत दुखी थे ।

यद्यपि इन्होंने स्वयं सब कुछ प्राप्त किया किन्तु दलित लोग सदा उनके हृदय में रहते थे । अतः निरन्तर विधिसम्मत संघर्ष के द्वारा दलितों की भलाई के लिए आरक्षण की व्यवस्था संविधान में किया। वे भारत के प्रथम विधि मंत्री थे । उन्होंने मरणोपरान्त 'भारतरत्न' के राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त किया। भारतीय समाज इनके योगदान को कभी नहीं भूलेगा ।

व्याकरणम्

सन्धि-विच्छेदः

- तत्रैव = तत्र + एव (वृद्धि सन्धि)
- इत्युपाधिम = इति + उपाधिम् (यण् सन्धि)
- यद्यपि = यदि + अपि (यण सन्धि)
- मरणोत्तरम् = मरण + उत्तरम् (गुण सन्धि)
- कदापि = कदा + अपि (दीर्घ सन्धि)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

https://www.evidyarthi.in/

जातः	=	$\sqrt{जन्}$ + क्त, पुं०, एकवचन
अभवत्	=	$\sqrt{भू}$, लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
आसीत्	=	$\sqrt{अस्}$, लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
उत्तीर्णः	=	उत् + $\sqrt{तॄ}$ + क्त, पुं० एकवचन
गृहीत्वा	=	$\sqrt{ग्रह्}$ + क्त्वा
कृतवान्	=	$\sqrt{कृ}$ + क्तवतु
स्थित्वा	=	$\sqrt{स्था}$ + क्त्वा
लब्ध्वा	=	$\sqrt{लभ्}$ + क्त्वा
प्राप्तवान्	=	प्र + $\sqrt{आप्}$ + क्तवतु, एकवचन
अत्यजत्	=	$\sqrt{त्यज्}$, लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
गत्वा	=	$\sqrt{गम्}$ + क्त्वा
आगम्य	=	आ + $\sqrt{गम्}$ + ल्यप्
वर्तते	=	$\sqrt{वृत्}$, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
गृहीतवान्	=	$\sqrt{ग्रह्}$ + क्तवतु, पुं०, एकवचन
पारयित्वा	=	$\sqrt{पॄ}$ + णिच् + क्त्वा
समाप्तम्	=	सम् + $\sqrt{आप्}$ + क्त, नपुं०, एकवचन
दृष्ट्वा	=	$\sqrt{दृश्}$ + क्त्वा
वञ्चिताः	=	$\sqrt{वंच्}$ + क्त, पुं०, बहुवचनम्
विस्मरति	=	वि + $\sqrt{स्मृ}$, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/